

शंकराचार्य पारमार्थिक दृष्टिकोण से यह कहते हैं कि - 'ब्रह्म सत्यं जगत् मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः' अर्थात् ब्रह्म ही सत्य है, जगत् मिथ्या है, जीव मूलतः ब्रह्म ही है, ब्रह्म से भिन्न नहीं है। ब्रह्म अपनी भौतिकता में निर्गुण निराकार, निर्विशेष है। ऐसा ब्रह्म जब माया की उपाधि से युक्त होता है तो उसकी संज्ञा ईश्वर होती है। कहा भी गया है - "मायोपहितब्रह्म ईश्वरः"।

पारमार्थिक दृष्टिकोण से जो ब्रह्म है, वहीं व्यावहारिक दृष्टिकोण से ईश्वर है। यह ब्रह्म का सगुण रूप है जो ब्रह्म के तत्त्व लक्षणों से युक्त है। अपने शारीरक भाव्य में शंकर कहते हैं कि "द्विरूपम् हि ब्रह्म भव-गम्यते... एकम्पि ब्रह्म" अर्थात् ब्रह्म २ रूपों में जाना जाता है, यद्यपि कि वह एक ही है। यहाँ ईश्वर को सगुण ब्रह्म, अपर ब्रह्म या व्यावहारिक ब्रह्म कहा गया है।

शंकर के इस ईश्वर की निम्न विशेषताएँ हैं-

1. ईश्वर इस जगत् का निर्माणकर्ता, पालनकर्ता & विनाशकर्ता है।
2. ईश्वर इस जगत् का निमित्त & उपादान कारण दोनों है। वह अपनी माया शक्ति के द्वारा इस जगत् की सृष्टि करता है। वह माया का अधिपति है। परन्तु जिस प्रकार जाग्रत अपनी जागृ से प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार ईश्वर भी अपनी माया शक्ति से प्रभावित नहीं होता। सृष्टि की रचना में ईश्वर का कोई स्वार्थ नहीं है। सृष्टि ईश्वर की लीला है। निमित्त कारण होने के कारण ईश्वर विश्वव्यति है और उपादान कारण होने के कारण वह जगत् में व्याप्त भी है।

यहाँ इसे स्पष्ट करने के लिए मक्खी का उदाहरण दिया गया है।
ईश्वर कर्म नियम का संचालक है।

ईश्वर उन्नत गुणों से युक्त सगुण & व्यक्तित्वपूर्ण है। ईश्वर व्यावहारिक सत्ता का सर्वोच्च रूप है।

5 का ईश्वर विचार (सगुण ब्रह्म) निर्गुण ब्रह्म से निम्न रूपों में भिन्न है -

ब्रह्म (परब्रह्म)

निर्गुण, निराकार, निर्विशेष

पारमार्थिक सत्ता

अव्यक्तित्वपूर्ण

गुणों & उपाधियों द्वारा अवर्णनीय

उपासना का विषय नहीं है।

सभी प्रकार के द्वैत से परे है

ईश्वर (अपर ब्रह्म)

1. सगुण, साकार, सविशेष

2. व्यावहारिक सत्ता

3. व्यक्तित्वपूर्ण

4. वर्णनीय

5. उपासना का विषय है।

6. उपासक & उपास्य का द्वैत है।



यहाँ यह उल्लेखनीय है कि शंकर के दर्शन में ब्रह्म & ईश्वर दो पृथक् सत्तारूप नहीं हैं, बल्कि एक ही ब्रह्म की 2 अवस्थायें हैं। ईश्वर ब्रह्म का ही व्यावहारिक रूप है।

शंकर का यह ईश्वर विचार रामानुज के ईश्वर विचार से निम्न रूपों में भिन्न है -

5 का ईश्वर विचार

5 के अनुसार ब्रह्म & ईश्वर अलग-2 स्तर की सत्तारूप हैं। इनमें यद्यपि तात्त्विक भेद नहीं है, पर अवस्थागत भेद है।

2 का ईश्वर विचार

1. 2 के दर्शन में व्यवहार & धर्मार्थ का भेद नहीं है। ब्रह्म & ईश्वर दोनों समान स्तरीय सत्तारूप हैं।

ब्रह्म परमार्थिक सत्ता है, ईश्वर
व्यावहारिक सत्ता है।

दोनों एक ही हैं। ब्रह्म ही ईश्वर है,
ईश्वर ही ब्रह्म है।

2. ॐ का ईश्वर केवल व्यावहारिक दृष्टि से सर्वोच्च सत्ता है, निर्गुण ब्रह्म ही ईश्वर या ब्रह्म ही परम सत् है, ॐ का रूप से सब है। सर्वोच्च सत्ता है।



शंकर के दर्शन में ईश्वर की आवश्यकता क्यों?*

1. निर्गुण, निराकार, परमतत्त्व ब्रह्म का साक्षात्कार साधक सीधे-2 नहीं कर सकता। ईश्वर में विश्वास से उसमें अद्भुतों का विकास होता है, उसके चित्त की शुद्धि होती है तथा उसे सबैव अर्थात् कार्यो को करने की प्रेरणा मिलती है। इससे साधक का नैतिक विकास होता है और तब वह आत्म साक्षात्कार के भी योग्य हो जाता है। वस्तुतः ईश्वर में विश्वास से अज्ञानी की नास्तिकता दूर होती है और उसका आध्यात्मिक विकास होता है। ॐ का कहना भी है कि परमार्थ की प्राप्ति का रास्ता व्यवहार से होकर जाता है। अतः ब्रह्म साक्षात्कार हेतु व्यावहारिक स्तर की सर्वोच्च सत्ता अर्थात् ईश्वर का होना आवश्यक है।

परब्रह्म निर्गुण, निराकार & विनिर्देश है। ऐसी स्थिति में सृष्टि की व्याख्या की समस्या उत्पन्न हो जाती है। यदि सृष्टि की रचना सत्य होती तो फिर निर्गुण, निराकार ब्रह्म की अविकारी मानने में कठिनाई उत्पन्न हो जायेगी। अतः यहाँ सृष्टि की व्याख्या करने के लिए माया की उपाधि से युक्त ब्रह्म अर्थात् ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया गया है जो अपनी माया शक्ति के द्वारा इस नम्रा रूपात्मक जगत् की सृष्टि करती है। (कुछ पक्षों को Printed Note से देखेंगे)